B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : The Congress of Vienna (PPT)

B.A. Part-1

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

वियना कांग्रेस

पृष्ठभूमि

- फ्रांसीसी सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट की वाटरलू के मैदान में पराजय हुआ और उसे बंदी बनाकर सेंट हेलेना के निर्जन द्वीप पर भेज दिया गया। नेपोलियन के पतन के बाद मित्र राष्ट्रों के समक्ष अनेक कठिनाइयां उत्पन्न हुई, जिनसे यूरोप के सभी राष्ट्र किसी न किसी रूप में प्रभावित हुए।
- अतः यूरोप के मानचित्र में नेपोलियन ने जो मनमाने ढंग से परिवर्तन किया था, उन्हें फिर से सुधारने के लिए ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में मित्र राष्ट्र ने एक सम्मलेन का आयोजन किया जो यूरोप के इतिहास में 'वियना कांग्रेस' के नाम से प्रसिद्ध है।
- वियना को इस कांग्रेस हेतु चुने जाने का प्रमुख कारण यह था कि वह महाद्वीप के केंद्र में स्थित था और नेपोलियन के युद्धों का मुख्य शिकार रहा था। साथ ही नेपोलियन की पराजय में ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिख ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- इस सम्मेलन में यूरोप के कई छोटे-छोटे देश शामिल हुए किंतु नीति निर्माण के संबंध में चार प्रमुख राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यह नेता थे- ऑस्ट्रिया का चांसलर मेटरनिख, रूस का जार अलेक्जेंडर, इंग्लैंड का विदेशमंत्री लॉर्ड कैसलरे तथा फ्रांसीसी विदेश मंत्री तैलरा।

वियना कांग्रेस के समक्ष समस्याएं

- यूरोप का पुनर्निर्माण करते समय ऐसी व्यवस्था करनी थी जिससे फ्रांस भविष्य में वहां शांति भंग न कर सके। अतः आवश्यक था कि फ्रांस की सीमाओं पर शक्तिशाली राष्ट्रों की स्थापना की जाए।
- मृतप्राय पवित्र रोमन साम्राज्य के स्थान पर जर्मनी में नवीन व्यवस्था स्थापित करना।
- नेपोलियन का साथ देने वाले राष्ट्रों के साथ किस प्रकार की नीति अपनाई जाए।
- इटली में नवीन व्यवस्था करना तथा डेनमार्क को नेपोलियन का साथ देने के कारण दंडित करना।
- पोप की शक्ति व गौरव को बढ़ाना एवं प्रतिक्रियावादी भावनाओं को कुचलना।
- नेपोलियन ने फ्रांसीसी क्रांति के उच्च आदर्शों को यूरोप में फैलाया था। इन सिद्धांतों को कैसे रोका जाए जिससे बढ़ती राष्ट्रीयता की भावना अन्य साम्राज्यों को विखंडित न कर दे।

वियना कांग्रेस के प्रमुख सिद्धांत

- उपरोक्त समस्याओं के समाधान के लिए वियना कांग्रेस ने कुछ सिद्धांत बनाए जो निम्न थे-
- **वैधता का सिद्धांत-** इस सिद्धांत के तहत यह तय किया गया कि पुराने राजवंशों का उद्धार करके उन्हें उनके राज्य फिर से सौंप दिया जाए। वस्तुतः नेपोलियन ने युद्धों में कई यूरोपीय राज्यों पर आधिपत्य स्थापित कर लिया था और वहां के शासकों का उन्मूलन कर दिया था। इसके तहत यह निश्चित किया गया कि फ्रांस में बूर्वोवंश को फिर से स्थापित किया जाए।
- **शक्ति संतुलन का सिद्धांत-** इस सिद्धांत के द्वारा कांग्रेस ने यूरोप के राजाओं के मध्य शक्ति संतुलन स्थापित करने का निश्चय किया, जिससे कोई भी शक्तिशाली देश दूसरे निर्बल देश को हरप न सके। इस सिद्धांत का पालन करते हुए फ्रांस को चारों ओर से शक्तिशाली राष्ट्रों से घेर दिया गया ताकि वह भविष्य में यूरोप की शांति को पुनः भंग न कर सके।
- **पुरस्कार एवं दंड का सिद्धांत-** इस सिद्धांत के अंतर्गत उन सभी राज्यों को पुरस्कार देने का निर्णय किया गया, जिन्होंने नेपोलियन को पराजित करने में मित्र राष्ट्रों का सहयोग किया था। साथ ही उन समस्त राज्यों को दंड देने का निर्णय किया गया जिन्होंने युद्ध में नेपोलियन को सहयोग एवं समर्थन प्रदान किया था।

वियना कांग्रेस के महत्वपूर्ण निर्णय

नई प्रादेशिक व्यवस्था

- फ्रांस- फ्रांस के साथ एक नई संधि की गई जिसके अनुसार उससे वे सारे प्रदेश छीन लिए गए जो उसने क्रांति काल और नेपोलियन के युद्ध में अपने राज्य में सम्मिलित कर लिए थे तथा फ्रांस की क्रांति काल के पूर्व की सीमाओं को स्वीकार कर लिया गया। प्रशा और ऑस्ट्रिया, फ्रांस के कुछ प्रदेशों को हड़प कर जाना चाहते थे किंतु इंग्लैंड तथा रूस के हस्तक्षेप के कारण यह संभव नहीं हो सका। फ्रांस पर अंकुश बनाए रखने के लिए उसकी सीमाओं पर शक्तिशाली राष्ट्रों को स्थापित किया गया।
- जर्मनी- नेपोलियन के उत्थान से पूर्व जर्मनी अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था। नेपोलियन ने राइन संघ का गठन करके जर्मनी के एकीकरण का प्रयास किया था परंतु नेपोलियन के पतन के बाद जर्मन राज्यों को स्वीकृति प्रदान करने का प्रश्न भी मित्र राष्ट्रों के सामने अत्यंत विचारणीय था। जर्मनी में राष्ट्रीयता की भावना अत्यंत प्रबल थी और मेटरनिख राष्ट्रीयता के नाम से घबराता था। अतः पवित्र रोमन साम्राज्य के स्थान पर परिसंघ का अध्यक्ष ऑस्ट्रिया बना। परिसंघ को सुदृढ़ बनाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए गए जिससे विभिन्न राज्यों के परस्पर संबंध अत्यंत शिथिल बने रहे।

वियना कांग्रेस के महत्वपूर्ण निर्णय-1

- इटली तथा ऑस्ट्रिया- इटली को अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बांट दिया गया। नेपल्स पर बूर्वो वंश के शासक फर्डिनेंड का अधिकार मान लिया गया। रोम के पोप को फिर से अपना राज्य वापस मिल गया। सार्डिनीया को पीडमोंड तथा सेवॉय दिए गए।
- ऑस्ट्रिया- ऑस्ट्रिया को लोम्बार्डी का प्रदेश दिया गया और टस्कनी तथा मोडेना के राज्य पर पुराने ऑस्ट्रियन वंश के शासकों को गद्दी पर बैठाया गया। इस प्रकार इटली के पुरातन व्यवस्था को फिर से स्थापित किया गया जिसमें ऑस्ट्रिया का प्रधान्य बना रहा।
- इंग्लैंड- इंग्लैंड का प्रमुख उद्देश्य अपने औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार करना था इसलिए वियना सम्मेलन में उपस्थित उसके प्रतिनिधियों का मंतव्य औपनिवेशिक महत्व के प्रदेश प्राप्त करना था। उसे उत्तरी सागर में हैलीगोलैंड और माल्टा के द्वीप मिले तथा आयोनियन द्वीपों की संरक्षता भी प्राप्त हुई।

वियना कांग्रेस के महत्वपूर्ण निर्णय-2

- **अंतर्राष्ट्रीय संविधान का निर्माण-** पहली बार अंतरराष्ट्रीय संविधान का निर्माण किया गया। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय नदियों में जहाजों के आवागमन के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।
- **दास प्रथा का विरोध-** इसके अतिरिक्त वियना सम्मेलन में कुछ अन्य समस्याएं भी प्रस्तुत की गई जिनमें दास व्यापार का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। इस सम्मेलन में दास प्रथा को अनैतिक एवं अमानवीय स्वीकार किया और प्रत्येक राज्य से इसका अंत करने का आग्रह किया।
- **अंतरराष्ट्रीय संस्था का निर्माण-** भविष्य में यूरोप में शांति बनाए रखने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संस्था की स्थापना की गई जो संयुक्त व्यवस्था/यूरोपीय व्यवस्था के नाम से जानी जाती है।

वियना कांग्रेस की आलोचना

- वियाना कांग्रेस ने यूरोप में स्थायी शांति स्थापित नहीं की। इस सम्मेलन का उद्घाटन ऊंचे आदर्शों एवं उद्देश्यों के आकर्षक घोषणाओं के साथ हुआ था, परंतु कांग्रेस में लूट का दृष्टिकोण प्रबल रहा। इसमें क्रांति के सिद्धांतों को भूला दिया गया और समस्याओं को हल करने के स्थान पर उन्हें बढ़ाने में सहयोग किया।
- इस कांग्रेस के निर्णयों को कार्यान्वित करते समय इसके सिद्धांतों की पूर्ण अवहेलना की गई। फ्रांस के प्रति वियना कांग्रेस का दृष्टिकोण अत्यंत दयालु था, किंतु यूरोप के छोटे राष्ट्रों की भावनाओं का इस सम्मेलन में कोई ध्यान नहीं रखा गया। बेल्जियम को हॉलैंड से मिला देना वहां की जनता के साथ घोर अन्याय था।
- समझौते में सबसे भयंकर कमी यह थी कि इसमें जनता को, विभिन्न राजवंशों को, दूसरे राज्यों से भूमि हड़पने की प्रवृत्ति को पूरा करने के लिए, इसे पास के रूप में प्रयोग किया गया था।
- नार्वे का स्वीडन से संयोजन अन्यायपूर्ण था। फिनलैंड तथा पोलैंड को रूस से मिलाकर वियना सम्मेलन ने एक और भूल की थी।

वियना कांग्रेस की आलोचना-1

- गणराज्य पर न्यायोचित सत्ता के सिद्धांत को लागू न करना ओछापन और विश्वासघात था। ऑस्ट्रिया को वीनस और सार्डिनीया तथा पिडमोंट को जिनेवा का प्रदेश देना गणतंत्रवाद की स्पष्ट अवहेलना थी। सेक्सनी का विभाजन भी अत्यंत दोषपूर्ण था।
- 1830 ई. तक वियना कांग्रेस द्वारा स्थापित की गई व्यवस्थाएं किसी न किसी प्रकार से सजीव बनी रही किंतु इसके बाद 1830 ई. व 1848 ई. में होने वाली क्रांति ने प्रबल प्रतिक्रियावादी मेटरनिख तक की जड़ों को झकझोर दिया। राष्ट्रीय भावनाओं के विकास एवं राजनीतिक चेतना के उदय के परिणामस्वरूप वियना कांग्रेस धीरे-धीरे पतन की ओर उन्मुख हुई।

वियना कांग्रेस का महत्व

- वियना कांग्रेस में यूरोप के नव निर्माण का प्रयास किया गया। उसके द्वारा स्थापित व्यवस्था की कुछ बातें ही स्थायी सिद्ध हुई। फिर भी वियना कांग्रेस की उपलब्धियों को नकारा नहीं जा सकता। उसके निर्णयों का यूरोप के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

❖इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य विश्व शांति के लिए व्यवहारिक व्यवस्था तैयार करना था जिसमें वह पूरी तरह से सफल रहा क्योंकि इस सम्मेलन के फलस्वरूप यूरोप में क्रीमिया के युद्ध से पहले कोई भयानक युद्ध नहीं हुआ और 40 वर्ष तक देश में शांति बनी रही।

निष्कर्ष

❖नि:संदेह वियना कांग्रेस की व्यवस्था, कार्यप्रणाली एवं उसके प्रतिनिधियों में अनेकानेक दोष व कमियां थी किंतु इसके बाद भी प्रोफेसर कैटेलबी का यह मत नितांत सत्य प्रतीत होता है कि वियना सम्मेलन में राजनीतिक संयम और दूरदर्शिता का अभाव नहीं था। यूरोप के इतिहास में इसके अनेक महत्वपूर्ण स्थायी प्रभाव हुए। इस सम्मेलन ने कुछ ऐसे आधार प्रदान किए जिन पर भविष्य के यूरोप की नींव रखी गई।

❖यह सत्य है कि वियना कांग्रेस पुरातन परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते थे, किंतु उनकी सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने अगले 40 वर्षों तक यूरोप को युद्ध से बचाए रखा।